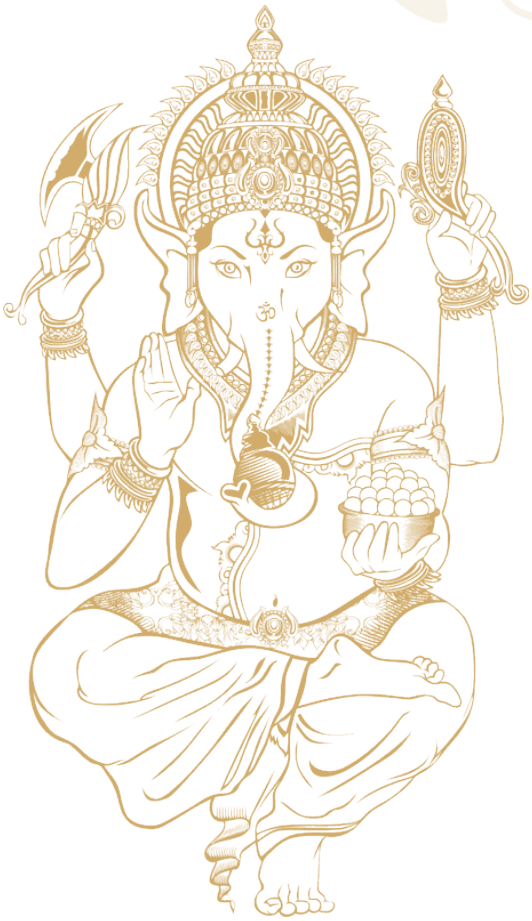

# Alisha utreja

10 Nov 1994

02:53 PM

Abohar

Model: Web-MyKundli

Order No: 119521901

# सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

| | |
|---|---|
| लिंग | स्त्रीलिंग |
| **जन्म तिथि** | **10/11/1994** |
| दिन | गुरुवार |
| **जन्म समय** | **14:53:00 घंटे** |
| इष्ट | 19:56:40 घटी |
| **स्थान** | **Abohar** |
| राज्य | Punjab |
| देश | India |

| | |
|---|---|
| अक्षांश | 30:09:00 उत्तर |
| रेखांश | 74:11:00 पूर्व |
| मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| स्थानिक संस्कार | -00:33:16 घंटे |
| ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| स्थानिक समय | 14:19:44 घंटे |
| वेलान्तर | 00:16:08 घंटे |
| साम्पातिक काल | 17:36:58 घंटे |
| सूर्योदय | 06:54:19 घंटे |
| सूर्यास्त | 17:39:52 घंटे |
| दिनमान | 10:45:33 घंटे |
| सूर्य स्थिति(अयन) | दक्षिणायन |
| सूर्य स्थिति(गोल) | दक्षिण |
| ऋतु | हेमन्त |
| सूर्य के अंश | 23:57:55 तुला |
| लग्न के अंश | 27:50:36 कुम्भ |

**अवकहड़ा चक्र**

| | |
|---|---|
| लग्न-लग्नाधिपति | कुम्भ - शनि |
| **राशि-स्वामी** | **मकर - शनि** |
| **नक्षत्र-चरण** | **धनिष्ठा - 1** |
| नक्षत्र स्वामी | मंगल |
| योग | वृद्धि |
| करण | बव |
| गण | राक्षस |
| योनि | सिंह |
| नाड़ी | मध्य |
| वर्ण | वैश्य |
| वश्य | जलचर |
| वर्ग | मार्जार |
| युँजा | अन्त्य |
| हंसक | भूमि |
| जन्म नामाक्षर | गा-गामिनी |
| पाया(राशि-नक्षत्र) | लौह - ताम्र |
| सूर्य राशि(पाश्चात्य) | वृश्चिक |

# पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

| कैलेंडर | वर्ष | मास | तिथि/प्रविष्टे |
|---|---|---|---|
| राष्ट्रीय | शक : 1916 | कार्तिक | 19 |
| पंजाबी | संवत : 2051 | कार्तिक | 25 |
| बंगाली | सन् : 1401 | कार्तिक | 24 |
| तमिल | संवत : 2051 | आइपसी | 25 |
| केरल | कोल्लम : 1170 | तुलम | 24 |
| नेपाली | संवत : 2051 | कार्तिक | 25 |
| चैत्रादि | संवत : 2051 | कार्तिक | शुक्ल 8 |
| कार्तिकादि | संवत : 2051 | कार्तिक | शुक्ल 8 |

**पंचांग**

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 8
तिथि समाप्ति काल _____: 23:38:36
जन्म तिथि _____: 8
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: श्रवण
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 10:49:19 घंटे
जन्म योग _____: धनिष्ठा
सूर्योदय कालीन योग ____: वृद्धि
योग समाप्ति काल _____: 27:04:51 घंटे
जन्म योग _____: वृद्धि
सूर्योदय कालीन करण ____: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 11:43:53 घंटे
जन्म करण _____: बव
भयात _____: 10:09:12
भभोग _____: 61:29:09
भोग्य दशा काल _____: मंगल 5 वर्ष 9 मा 29 दि

**घात चक्र**

मास _____: वैशाख
तिथि _____: 4-9-14
दिन _____: मंगलवार
नक्षत्र _____: रोहिणी
योग _____: वैधृति
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: मूषक
लग्न _____: कुम्भ
सूर्य _____: कुम्भ
चन्द्र _____: वृश्चिक
मंगल _____: मीन
बुध _____: धनु
गुरु _____: मेष
शुक्र _____: वृष
शनि _____: मकर
राहु _____: मिथुन

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुंडली

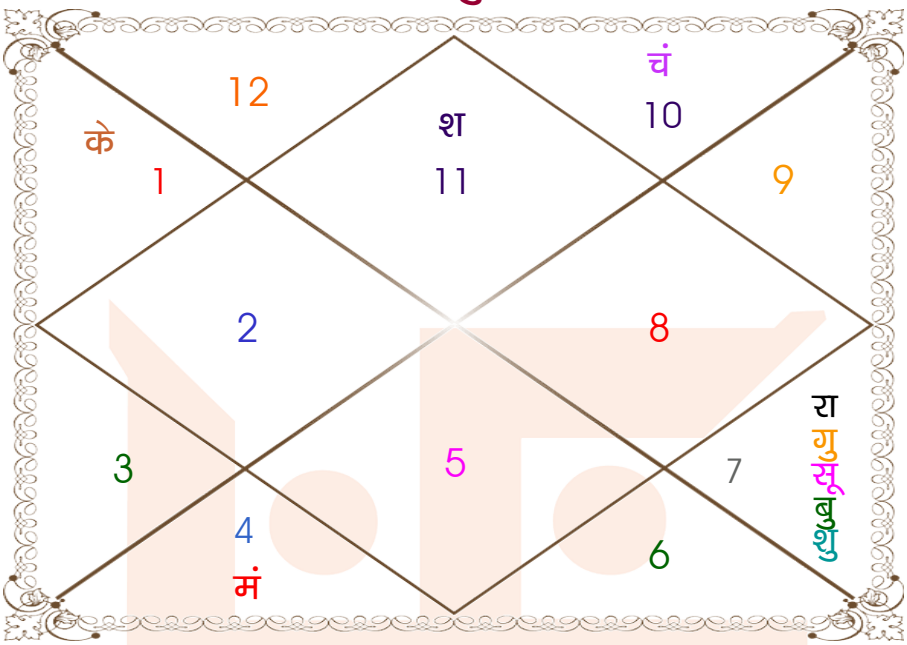


## चन्द्र कुंडली

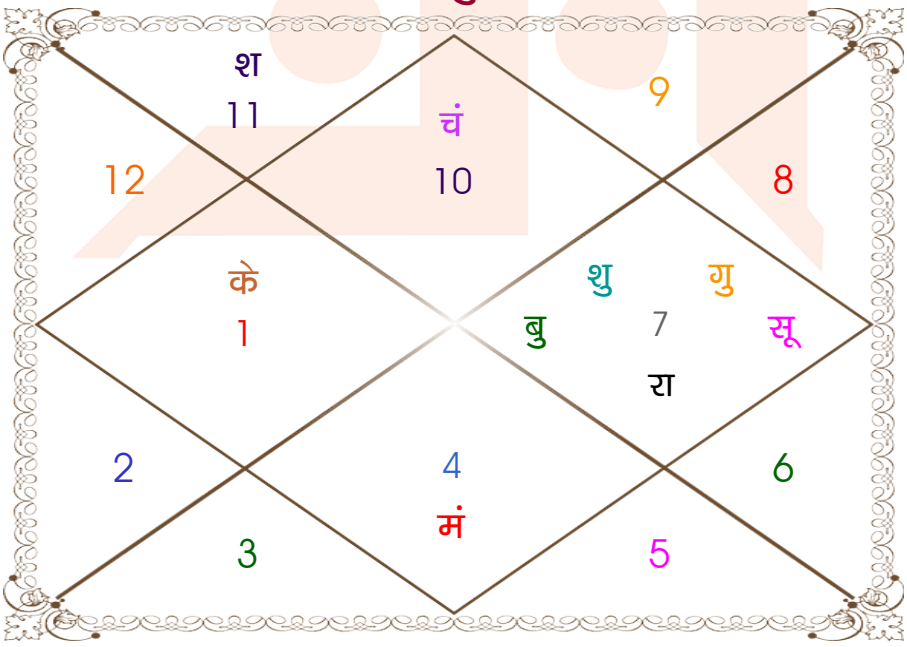

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

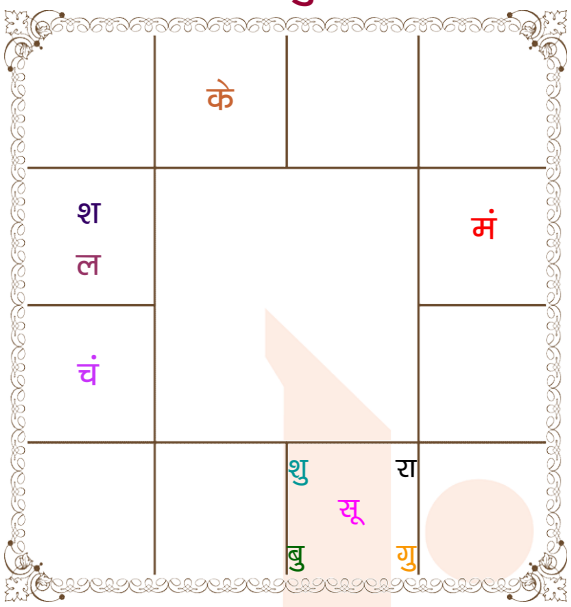


## लग्न कुंडली

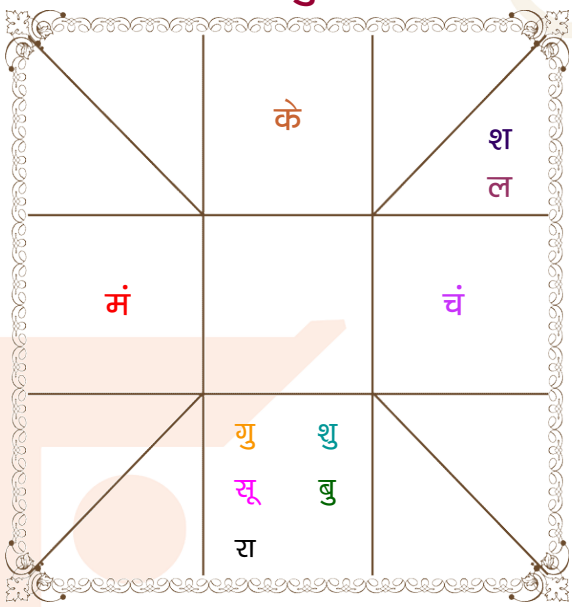


### विंशोत्तरी
### मंगल 5वर्ष 9मा 29दि

**मंगल**

**10/11/1994**

**10/09/2113**

| | |
|---|---|
| मंगल | 08/09/2000 |
| राहु | 09/09/2018 |
| गुरु | 09/09/2034 |
| शनि | 09/09/2053 |
| बुध | 09/09/2070 |
| केतु | 09/09/2077 |
| शुक्र | 09/09/2097 |
| सूर्य | 10/09/2103 |
| चन्द्र | 10/09/2113 |

### योगिनी
### पिंगला 1वर्ष 7मा 30दि

**संकटा**

**11/07/2021**

**11/07/2029**

| | |
|---|---|
| संकटा | 21/04/2023 |
| मंगला | 11/07/2023 |
| पिंगला | 21/12/2023 |
| धान्या | 20/08/2024 |
| भ्रामरी | 11/07/2025 |
| भद्रिका | 21/08/2026 |
| उल्का | 21/12/2027 |
| सिद्धा | 11/07/2029 |

# ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | कुंभ | 27:50:36 | 522:49:26 | पू०भाद्रपद | 3 | 25 | शनि | गुरु | शुक्र | --- |
| सूर्य | | | तुला | 23:57:55 | 01:00:18 | विशाखा | 2 | 16 | शुक्र | गुरु | बुध | नीच राशि |
| चंद्र | | | मक | 25:33:43 | 13:08:16 | धनिष्ठा | 1 | 23 | शनि | मंगल | राहु | सम राशि |
| मंगल | | | कर्क | 24:58:13 | 00:26:34 | आश्लेषा | 3 | 9 | चंद्र | बुध | राहु | नीच राशि |
| बुध | | | तुला | 06:01:25 | 01:19:42 | चित्रा | 4 | 14 | शुक्र | मंगल | चंद्र | मित्र राशि |
| गुरु | | अ | तुला | 29:48:11 | 00:13:15 | विशाखा | 3 | 16 | शुक्र | गुरु | चंद्र | शत्रु राशि |
| शुक्र | व | | तुला | 12:15:15 | 00:30:19 | स्वाति | 2 | 15 | शुक्र | राहु | शनि | मूलत्रिकोण |
| शनि | | | कुंभ | 11:53:31 | 00:00:07 | शतभिषा | 2 | 24 | शनि | राहु | शनि | मूलत्रिकोण |
| राहु | | | तुला | 21:00:54 | 00:00:12 | विशाखा | 1 | 16 | शुक्र | गुरु | गुरु | मित्र राशि |
| केतु | | | मेष | 21:00:54 | 00:00:12 | भरणी | 3 | 2 | मंगल | शुक्र | गुरु | मित्र राशि |
| हर्ष | | | धनु | 29:14:57 | 00:01:56 | उत्तराषाढ़ा | 1 | 21 | गुरु | सूर्य | राहु | --- |
| नेप | | | धनु | 27:11:52 | 00:01:15 | उत्तराषाढ़ा | 1 | 21 | गुरु | सूर्य | सूर्य | --- |
| प्लूटो | | | वृश्चि | 03:46:43 | 00:02:22 | अनुराधा | 1 | 17 | मंगल | शनि | शनि | --- |
| दशम भाव | | | धनु | 00:55:41 | -- | मूल | -- | 19 | गुरु | केतु | शुक्र | -- |

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

**चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:47:18

## लग्न-चलित

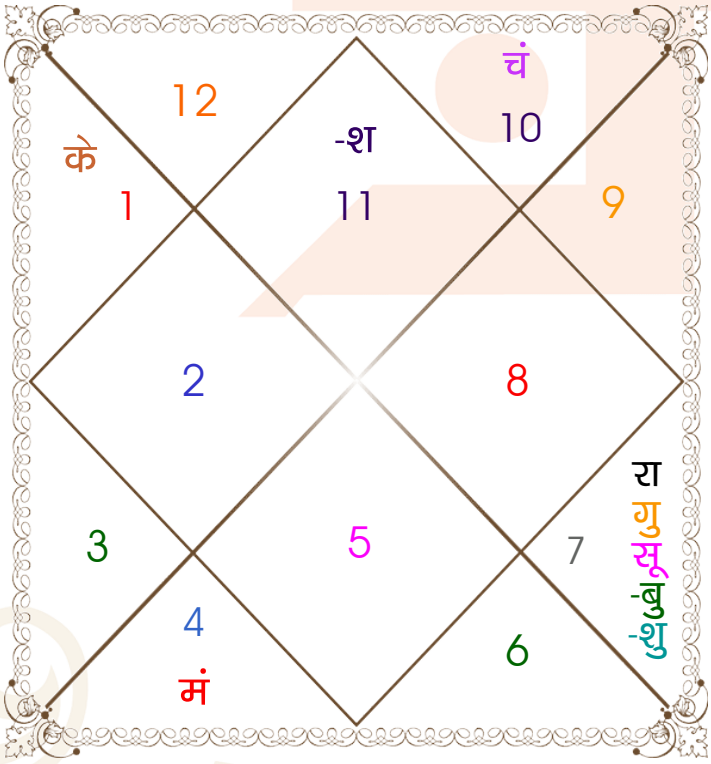


## चन्द्र कुंडली

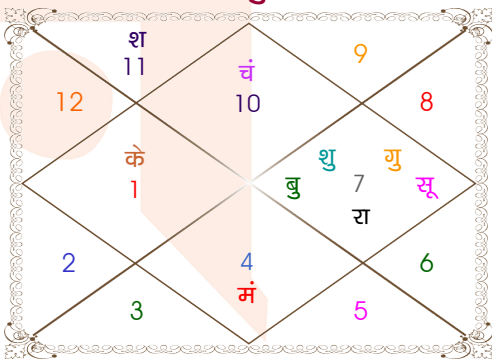


## नवमांश कुंडली

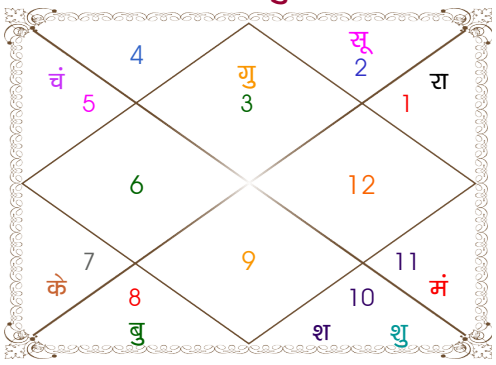

# चलित तथा निरयण भाव चलित

## चलित अंश

| भाव | भाव संधि | | भाव मध्य | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | कुम्भ | 13:21:27 | कुम्भ | 27:50:36 |
| 2 | मीन | 13:21:27 | मीन | 28:52:18 |
| 3 | मेष | 14:23:09 | मेष | 29:53:59 |
| 4 | वृष | 15:24:50 | मिथुन | 00:55:41 |
| 5 | मिथुन | 15:24:50 | मिथुन | 29:53:59 |
| 6 | कर्क | 14:23:09 | कर्क | 28:52:18 |
| 7 | सिंह | 13:21:27 | सिंह | 27:50:36 |
| 8 | कन्या | 13:21:27 | कन्या | 28:52:18 |
| 9 | तुला | 14:23:09 | तुला | 29:53:59 |
| 10 | वृश्चिक | 15:24:50 | धनु | 00:55:41 |
| 11 | धनु | 15:24:50 | धनु | 29:53:59 |
| 12 | मकर | 14:23:09 | मकर | 28:52:18 |

## निरयण भाव चलित

| भाव | राशि | अंश |
|---|---|---|
| 1 | कुम्भ | 27:50:36 |
| 2 | मेष | 07:15:11 |
| 3 | वृष | 06:44:36 |
| 4 | मिथुन | 00:55:41 |
| 5 | मिथुन | 24:22:11 |
| 6 | कर्क | 21:29:28 |
| 7 | सिंह | 27:50:36 |
| 8 | तुला | 07:15:11 |
| 9 | वृश्चिक | 06:44:36 |
| 10 | धनु | 00:55:41 |
| 11 | धनु | 24:22:11 |
| 12 | मकर | 21:29:28 |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धनिष्ठा | शतभिषा | पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका | रोहिणी |
| मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त |
| चित्रा | स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा | श्रवण |

## चलित कुंडली

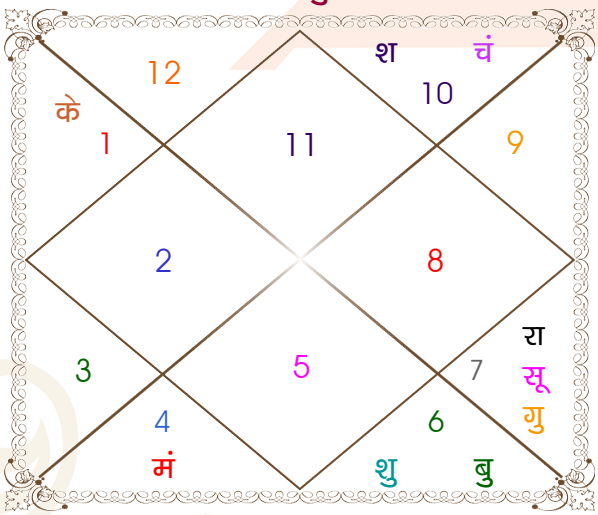


## भाव कुंडली

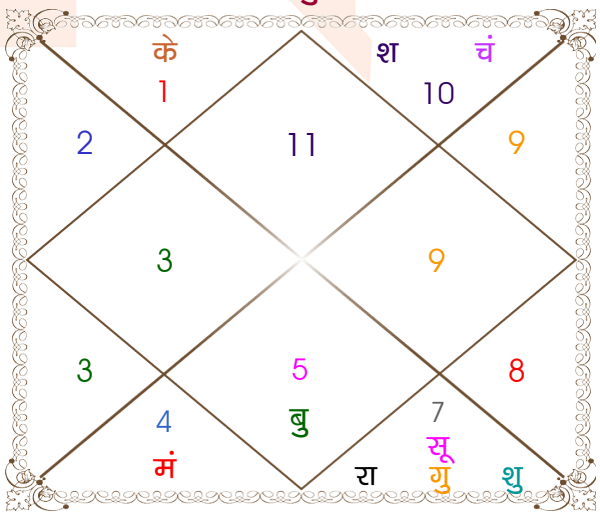

# विंशोत्तरी दशा

## भोग्य दशा काल : मंगल 5 वर्ष 9 मास 29 दिन

| मंगल 7 वर्ष | | राहु 18 वर्ष | | गुरु 16 वर्ष | | शनि 19 वर्ष | | बुध 17 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10/11/1994 | | 08/09/2000 | | 09/09/2018 | | 09/09/2034 | | 09/09/2053 | |
| 08/09/2000 | | 09/09/2018 | | 09/09/2034 | | 09/09/2053 | | 09/09/2070 | |
| | 10/11/1994 | राहु | 23/05/2003 | गुरु | 27/10/2020 | शनि | 12/09/2037 | बुध | 05/02/2056 |
| राहु | 23/02/1995 | गुरु | 15/10/2005 | शनि | 10/05/2023 | बुध | 22/05/2040 | केतु | 02/02/2057 |
| गुरु | 30/01/1996 | शनि | 21/08/2008 | बुध | 15/08/2025 | केतु | 01/07/2041 | शुक्र | 03/12/2059 |
| शनि | 10/03/1997 | बुध | 11/03/2011 | केतु | 22/07/2026 | शुक्र | 30/08/2044 | सूर्य | 09/10/2060 |
| बुध | 07/03/1998 | केतु | 28/03/2012 | शुक्र | 22/03/2029 | सूर्य | 12/08/2045 | चंद्र | 10/03/2062 |
| केतु | 03/08/1998 | शुक्र | 29/03/2015 | सूर्य | 08/01/2030 | चंद्र | 14/03/2047 | मंगल | 08/03/2063 |
| शुक्र | 04/10/1999 | सूर्य | 21/02/2016 | चंद्र | 10/05/2031 | मंगल | 21/04/2048 | राहु | 24/09/2065 |
| सूर्य | 08/02/2000 | चंद्र | 21/08/2017 | मंगल | 15/04/2032 | राहु | 26/02/2051 | गुरु | 31/12/2067 |
| चंद्र | 08/09/2000 | मंगल | 09/09/2018 | राहु | 09/09/2034 | गुरु | 09/09/2053 | शनि | 09/09/2070 |

| केतु 7 वर्ष | | शुक्र 20 वर्ष | | सूर्य 6 वर्ष | | चंद्र 10 वर्ष | | मंगल 7 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 09/09/2070 | | 09/09/2077 | | 09/09/2097 | | 10/09/2103 | | 10/09/2113 | |
| 09/09/2077 | | 09/09/2097 | | 10/09/2103 | | 10/09/2113 | | 00/00/0000 | |
| केतु | 05/02/2071 | शुक्र | 08/01/2081 | सूर्य | 27/12/2097 | चंद्र | 11/07/2104 | मंगल | 06/02/2114 |
| शुक्र | 06/04/2072 | सूर्य | 08/01/2082 | चंद्र | 28/06/2098 | मंगल | 09/02/2105 | राहु | 11/11/2114 |
| सूर्य | 12/08/2072 | चंद्र | 09/09/2083 | मंगल | 03/11/2098 | राहु | 11/08/2106 | | 00/00/0000 |
| चंद्र | 13/03/2073 | मंगल | 08/11/2084 | राहु | 28/09/2099 | गुरु | 11/12/2107 | | 00/00/0000 |
| मंगल | 09/08/2073 | राहु | 09/11/2087 | गुरु | 17/07/2100 | शनि | 11/07/2109 | | 00/00/0000 |
| राहु | 28/08/2074 | गुरु | 10/07/2090 | शनि | 29/06/2101 | बुध | 10/12/2110 | | 00/00/0000 |
| गुरु | 04/08/2075 | शनि | 09/09/2093 | बुध | 05/05/2102 | केतु | 11/07/2111 | | 00/00/0000 |
| शनि | 12/09/2076 | बुध | 10/07/2096 | केतु | 10/09/2102 | शुक्र | 11/03/2113 | | 00/00/0000 |
| बुध | 09/09/2077 | केतु | 09/09/2097 | शुक्र | 10/09/2103 | सूर्य | 10/09/2113 | | 00/00/0000 |

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 5 वर्ष 10 मा 4 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| गुरु - केतु | | गुरु - शुक्र | | गुरु - सूर्य | | गुरु - चंद्र | | गुरु - मंगल | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15/08/2025 | | 22/07/2026 | | 22/03/2029 | | 08/01/2030 | | 10/05/2031 | |
| 22/07/2026 | | 22/03/2029 | | 08/01/2030 | | 10/05/2031 | | 15/04/2032 | |
| केतु | 04/09/2025 | शुक्र | 01/01/2027 | सूर्य | 06/04/2029 | चंद्र | 18/02/2030 | मंगल | 30/05/2031 |
| शुक्र | 31/10/2025 | सूर्य | 18/02/2027 | चंद्र | 30/04/2029 | मंगल | 18/03/2030 | राहु | 21/07/2031 |
| सूर्य | 17/11/2025 | चंद्र | 10/05/2027 | मंगल | 17/05/2029 | राहु | 31/05/2030 | गुरु | 04/09/2031 |
| चंद्र | 16/12/2025 | मंगल | 06/07/2027 | राहु | 30/06/2029 | गुरु | 03/08/2030 | शनि | 28/10/2031 |
| मंगल | 04/01/2026 | राहु | 29/11/2027 | गुरु | 08/08/2029 | शनि | 20/10/2030 | बुध | 15/12/2031 |
| राहु | 25/02/2026 | गुरु | 07/04/2028 | शनि | 23/09/2029 | बुध | 28/12/2030 | केतु | 04/01/2032 |
| गुरु | 11/04/2026 | शनि | 08/09/2028 | बुध | 04/11/2029 | केतु | 25/01/2031 | शुक्र | 01/03/2032 |
| शनि | 04/06/2026 | बुध | 24/01/2029 | केतु | 21/11/2029 | शुक्र | 16/04/2031 | सूर्य | 18/03/2032 |
| बुध | 22/07/2026 | केतु | 22/03/2029 | शुक्र | 08/01/2030 | सूर्य | 10/05/2031 | चंद्र | 15/04/2032 |

| गुरु - राहु | | शनि - शनि | | शनि - बुध | | शनि - केतु | | शनि - शुक्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15/04/2032 | | 09/09/2034 | | 12/09/2037 | | 22/05/2040 | | 01/07/2041 | |
| 09/09/2034 | | 12/09/2037 | | 22/05/2040 | | 01/07/2041 | | 30/08/2044 | |
| राहु | 25/08/2032 | शनि | 02/03/2035 | बुध | 29/01/2038 | केतु | 15/06/2040 | शुक्र | 10/01/2042 |
| गुरु | 20/12/2032 | बुध | 05/08/2035 | केतु | 27/03/2038 | शुक्र | 21/08/2040 | सूर्य | 08/03/2042 |
| शनि | 08/05/2033 | केतु | 08/10/2035 | शुक्र | 07/09/2038 | सूर्य | 10/09/2040 | चंद्र | 13/06/2042 |
| बुध | 09/09/2033 | शुक्र | 08/04/2036 | सूर्य | 26/10/2038 | चंद्र | 14/10/2040 | मंगल | 19/08/2042 |
| केतु | 30/10/2033 | सूर्य | 02/06/2036 | चंद्र | 16/01/2039 | मंगल | 07/11/2040 | राहु | 09/02/2043 |
| शुक्र | 25/03/2034 | चंद्र | 01/09/2036 | मंगल | 15/03/2039 | राहु | 06/01/2041 | गुरु | 13/07/2043 |
| सूर्य | 08/05/2034 | मंगल | 04/11/2036 | राहु | 09/08/2039 | गुरु | 01/03/2041 | शनि | 12/01/2044 |
| चंद्र | 20/07/2034 | राहु | 18/04/2037 | गुरु | 18/12/2039 | शनि | 04/05/2041 | बुध | 24/06/2044 |
| मंगल | 09/09/2034 | गुरु | 12/09/2037 | शनि | 22/05/2040 | बुध | 01/07/2041 | केतु | 30/08/2044 |

| शनि - सूर्य | | शनि - चंद्र | | शनि - मंगल | | शनि - राहु | | शनि - गुरु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30/08/2044 | | 12/08/2045 | | 14/03/2047 | | 21/04/2048 | | 26/02/2051 | |
| 12/08/2045 | | 14/03/2047 | | 21/04/2048 | | 26/02/2051 | | 09/09/2053 | |
| सूर्य | 17/09/2044 | चंद्र | 30/09/2045 | मंगल | 06/04/2047 | राहु | 25/09/2048 | गुरु | 30/06/2051 |
| चंद्र | 16/10/2044 | मंगल | 02/11/2045 | राहु | 06/06/2047 | गुरु | 10/02/2049 | शनि | 23/11/2051 |
| मंगल | 05/11/2044 | राहु | 28/01/2046 | गुरु | 30/07/2047 | शनि | 25/07/2049 | बुध | 02/04/2052 |
| राहु | 27/12/2044 | गुरु | 15/04/2046 | शनि | 02/10/2047 | बुध | 20/12/2049 | केतु | 26/05/2052 |
| गुरु | 11/02/2045 | शनि | 16/07/2046 | बुध | 28/11/2047 | केतु | 18/02/2050 | शुक्र | 28/10/2052 |
| शनि | 07/04/2045 | बुध | 06/10/2046 | केतु | 22/12/2047 | शुक्र | 11/08/2050 | सूर्य | 13/12/2052 |
| बुध | 26/05/2045 | केतु | 08/11/2046 | शुक्र | 28/02/2048 | सूर्य | 02/10/2050 | चंद्र | 28/02/2053 |
| केतु | 16/06/2045 | शुक्र | 13/02/2047 | सूर्य | 19/03/2048 | चंद्र | 28/12/2050 | मंगल | 23/04/2053 |
| शुक्र | 12/08/2045 | सूर्य | 14/03/2047 | चंद्र | 21/04/2048 | मंगल | 26/02/2051 | राहु | 09/09/2053 |

# शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

| | |
|---|---|
| मूलांक | 1 |
| भाग्यांक | 8 |
| मित्र अंक | 1, 4, 8, 9 |
| शत्रु अंक | 3, 5, 6 |
| शुभ वर्ष | 19,28,37,46,55 |
| शुभ दिन | शुक्र, शनि, मंगल |
| शुभ ग्रह | शुक्र, शनि, मंगल |
| मित्र राशि | कन्या, तुला |
| मित्र लग्न | वृष, तुला, धनु |
| अनुकूल देवता | नृसिंह |
| शुभ रत्न | नीलम |
| शुभ उपरत्न | जमुनिया, बिलौर |
| भाग्य रत्न | हीरा |
| शुभ धातु | लौह |
| शुभ रंग | काला |
| शुभ दिशा | पश्चिम |
| शुभ समय | संध्या |
| दान पदार्थ | कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह |
| दान अन्न | उड़द |
| दान द्रव्य | तेल |

# रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | शुभता | क्षेत्र |
|---|---|---|---|
| हीरा | शुक्र | 100% | भाग्योदय, सुख |
| नीलम | शनि | 89% | स्वास्थ्य, कम खर्च |
| गोमेद | राहु | 83% | भाग्योदय |
| पुखराज | गुरु | 78% | भाग्योदय, धनार्जन, धन |
| पन्ना | बुध | 75% | भाग्योदय, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव |
| माणिक्य | सूर्य | 55% | भाग्योदय, दम्पति |
| मूंगा | मंगल | 38% | शत्रु व रोग, पराक्रम हानि, व्यावसायिक हानि |
| लहसुनिया | केतु | 28% | पराक्रम हानि, शत्रु व रोग |
| मोती | चंद्र | 0% | व्यय, शत्रु व रोग |

रत्न की शुभता

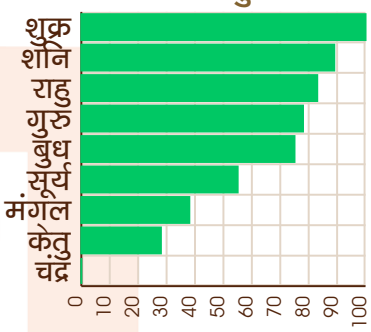


## दशानुसार रत्न विचार

| दशा | समाप्ति | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मंगल | 08/09/2000 | 61% | 0% | 56% | 62% | 84% | 100% | 89% | 70% | 41% |
| राहु | 09/09/2018 | 34% | 0% | 12% | 75% | 78% | 100% | 96% | 95% | 3% |
| गुरु | 09/09/2034 | 61% | 0% | 50% | 62% | 91% | 88% | 89% | 83% | 28% |
| शनि | 09/09/2053 | 34% | 0% | 12% | 81% | 78% | 100% | 100% | 89% | 3% |
| बुध | 09/09/2070 | 61% | 0% | 38% | 88% | 78% | 100% | 89% | 83% | 28% |
| केतु | 09/09/2077 | 34% | 0% | 50% | 75% | 78% | 100% | 77% | 70% | 52% |
| शुक्र | 09/09/2097 | 34% | 0% | 38% | 81% | 78% | 100% | 96% | 89% | 41% |
| सूर्य | 10/09/2103 | 67% | 0% | 50% | 75% | 84% | 88% | 77% | 70% | 3% |
| चंद्र | 10/09/2113 | 61% | 0% | 38% | 81% | 78% | 100% | 89% | 70% | 3% |

# साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

### प्रथम चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती तृतीय ढैया | 10/11/1994-02/06/1995 | 10/08/1995-16/02/1996 | ---------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 17/04/1998-07/06/2000 | ---------- | ---------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 01/11/2006-10/01/2007 | 16/07/2007-10/09/2009 | ---------- |
| साढेसाती प्रथम ढैया | 26/01/2017-21/06/2017 | 26/10/2017-24/01/2020 | ---------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 24/01/2020-29/04/2022 | 12/07/2022-17/01/2023 | ---------- |

### द्वितीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती तृतीय ढैया | 29/04/2022-12/07/2022 | 17/01/2023-29/03/2025 | ---------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 03/06/2027-20/10/2027 | 23/02/2028-08/08/2029 | 05/10/2029-17/04/2030 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 27/08/2036-22/10/2038 | 05/04/2039-13/07/2039 | ---------- |
| साढेसाती प्रथम ढैया | 08/12/2046-06/03/2049 | 10/07/2049-04/12/2049 | ---------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 06/03/2049-10/07/2049 | 04/12/2049-25/02/2052 | ---------- |

### तृतीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती तृतीय ढैया | 25/02/2052-14/05/2054 | 02/09/2054-05/02/2055 | ---------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 07/04/2057-27/05/2059 | ---------- | ---------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 13/10/2065-03/02/2066 | 03/07/2066-30/08/2068 | ---------- |
| साढेसाती प्रथम ढैया | 16/01/2076-11/07/2076 | 11/10/2076-15/01/2079 | ---------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 15/01/2079-12/04/2081 | 03/08/2081-07/01/2082 | ---------- |

### शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार | फल | क्षेत्र |
|---|---|---|
| साढेसाती तृतीय ढैया | शुभ | स्वास्थ्य |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | सम | पराक्रम हानि |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | सम | दाम्पत्य कलह |
| साढेसाती प्रथम ढैया | शुभ | धनार्जन |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | सम | कम खर्च |

# साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

**ऊँ शं शनैश्चराय नमः।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

# मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।**
**स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

**********

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्र कुंडली में सप्तम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगल का दोष भंग हो जाता है अतः इस मंगल के प्रभाव से आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। फलतः आपका एवं आपके पति का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु पति का स्वभाव अल्प मात्रा में उग्र हो सकता है। लेकिन इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में सम्पूर्ण सुखोपभोग के साधनों को अर्जित करेंगी एवं धन धान्य से युक्त होकर अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

यद्यपि आपके लिए यह मंगल शुभ फलदायक रहेगा परन्तु इसके कारण आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है लेकिन विवाह अत्यंत ही शांत एवं सुखद रूप से सम्पन्न होगा। इसमें आपको किसी भी प्रकार से विशेष समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के पश्चात भी आप का दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। पति के साथ आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे। एक दूसरे को जीवन में पूर्ण प्रेम तथा सहयोग प्रदान करेंगे जिसके कारण आप आनंद पूर्वक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगी।

आपकी चन्द्रकुंडली में सप्तम भाव में मंगल स्थित होने से पति के रूप में आप किसी सुयोग्य एवं सुन्दर पुरुष को प्राप्त करेंगी। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता एवं प्रगाढ़ता रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन में शान्ति तथा प्रसन्नता व्याप्त रहेगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेंगी तथा समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश अर्जित करेंगी। प्रथम भाव पर मंगल की दृष्टि से स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव परिलक्षित होगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आप विद्याध्ययन करने में सफल होंगी तथा परिश्रम पूर्वक उच्च शिक्षा भी प्राप्त कर सकेंगी। परिवार से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलेगा तथा पारिवारिक जीवन भी सुख एवं शान्ति से युक्त

रहेगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को और अधिक सुखमय एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसे मंगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसकी चन्द्रकुंडली में उचित नियमानुसार मांगलिक दोष भंग हो रहा हो। ऐसे पुरुष के साथ दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करके आप सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। एक सौभाग्यशाली महिला की तरह जीवन में समस्त सुख संसाधनों से युक्त होकर उसका सुख पूर्वक उपभोग करेंगी। साथ ही आप धन धान्य एवं वैभव से युक्त रहेंगी एवं समाज में ख्याति अर्जित करेंगी।

इसके अतिरिक्त कुंडली मिलान के समय जिस पुरुष की चन्द्रकुंडली में या जन्म कुंडली में मंगल सप्तम भाव में स्थित हो तो यदि अत्यावश्यक न हो तो यत्नपूर्वक इसकी उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल रहने से आप दोनों का शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। इससे दाम्पत्य जीवन में सुखोपभोग में अनावश्यक परेशानी उत्पन्न होगी। इसके अलावा अन्य भावों में स्थित मंगल प्रायः शुभ ही रहेगा एवं जीवन में अनावश्यक व्यवधान तथा समस्याएं उत्पन्न नहीं करेगा। अतः यदि आप सावधानी एवं सोच समझकर कुंडली मिलान करके दाम्पत्य जीवन प्रारंभ करेंगी तो आपका जीवन आनन्द एवं सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

# कालसर्प योग

**अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।**
**योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।**

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

## काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

## जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखचूड़ नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को भाग्योदय होने में थोड़ा व्यवधान उपस्थित होता है और नौकरी में आगे बढ़ने के प्रयास में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। परन्तु कालान्तर में व्यवधान स्वतः हट जाता है और कभी नौकरी में अवनति का भय होता है। व्यापार में थोड़ी बहुत रुकावट आकर नुकसान को जातक प्राप्त करता है। मित्रों द्वारा कपट व्यवहार होने के कारण जातक को धन की क्षति उठानी पड़ती है। पिता के सुख में न्यूनता रहती है। मामा पक्ष से या बहनोई से छल कपट किये जाने पर जातक आंशिक कष्ट पाता है और शासन की तरफ से भी थोड़ा बहुत मुसीबत आती है। अधिकारियों से कभी-कभी मनमुटाव हो जाता है। जिस कारण जातक को न्यायालय से कभी जुर्माना या आंशिक रूप में सजा मिल सकती है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में कभी-कभी रोग व्याधि ग्रसित कर लेती है। जिसमें थोड़ा बहुत धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। कालान्तर में पुनः वह सामान्य हो जाती है। जातक को चिन्ता परेशानी समय-समय पर लग जाती है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय बन जाता है तथा प्रायः भोग से अतृप्त रहती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। जातक कई प्रकार से धन्धे करता है पर स्थाई सफलता सदैव संदिग्ध रहती है। सुख प्राप्ति के लिए जातक को संघर्ष करना पड़ता है और सामाजिक मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा सामान्य रहती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।

11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

## पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

## पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।**
**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

## पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

## आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य, बुध, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर

पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

# ग्रह फल

## सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा। धन धान्य का वे पूर्ण लाभार्जन करेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार से आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी वे पूर्ण सहयोग एवं प्रेरणा आपको प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा किसी सैद्धान्तिक मतभेद पर इसमें कटुता या तनाव भी परिलक्षित होगा परन्तु कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका सुख दुःख में पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं उन्हें सर्वदा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी।

## चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।,

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी।

## मंगल

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, क्रोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

## बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

## गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराकमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

## शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

## शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

## राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

## केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

मेष राशि में केतु  हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

# दशा विश्लेषण

## महादशा :- गुरु
## ( 09/09/2018 - 09/09/2034 )

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा को 09/09/2018 आरम्भ और 09/09/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु नवम् भाव में स्थित है तथा नवम भाव विश्वास, भाग्य, अन्तर्ज्ञान, त्याग और दान, पिता, गुरु, दूर की यात्रा, उच्च शिक्षा तथा विदेश यात्रा का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है तथा जन्म कुण्डली में नवम् भाव में स्थित होकर प्रथम, तृतीय एवं पंचम् भाव को देख रहा है और इन भावों पर अच्छा प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्ष का यह दशा काल आपके लिए बहुत अच्छा होगा।

स्वास्थ्य :

नवम भाव में स्थित होकर प्रथम भाव पर गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप आप एक स्वस्थ जीवन व्यतीत करेंगे तथा दैनिक कार्य और उत्सव का भरपूर आनन्द उठाएंगे। आपके साथ कोई बड़ी घटना या दुर्घटना नहीं होगी।

व्यवसाय :

आपको नौकरी में पदोन्नति के अच्छे अवसर मिलेंगे जिससे आपकी आर्थिक तथा कार्यालयीय स्तर में वृद्धि होगी। व्यवसाय के प्रति आपके दिमाग में कुछ नवीन विचार आएंगे जिन्हें कार्यान्वित करने में आप सक्षम होंगे। आपको विदेश-गमन का अवसर मिलेगा और आप वहाँ अच्छा धनोपार्जन कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

गुरु पंचम भाव को देखते हुए नवम भाव में स्थित है जिससे आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण तथा आनंदमय होगा। आपके जीवन साथी पूर्ण सहयोग करेंगे और बच्चे आज्ञाकारी होंगे जिनसे आपको आनंद मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

धार्मिक स्वभाव होने के कारण आप साहित्य तथा सहयोगी विषयों का अध्ययन जारी रखेंगे।

## अंर्तदशा :- गुरु - बुध
## ( 10/05/2023 - 15/08/2025 )

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 09/09/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 10/05/2023 को प्रारंभ होकर 15/08/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाज़िरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आपकी ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी। लेखन, प्रकाशन, अध्यापन के लिए समय उत्तम है। उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। शिक्षा से संबंधित यात्रा हो सकती है। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। विज्ञान, गणित और ज्योतिष में महारत हासिल कर सकते हैं। धर्मशास्त्रों का अध्ययन कर सकते हैं। महत्वपूर्ण फैसले कर सकते हैं। उत्तम प्रशासनिक क्षमता और बुद्धिमानी के कारण धनार्जन उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं होंगीः उपयुक्त नियोजन और साधनों के सुप्रबंधन द्वारा धनलाभ होगा। आपके पिता को परिश्रम से लाभ होगा। माता को मानसिक और घरेलू सुख मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए विवाह, व्यापार से लाभ या उसका विस्तार, शिशु का जन्म, उत्तम मित्र और विशिष्ट उपलब्धियों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश और शेयरों से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मी सहयोग करेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, धनलाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को विचार-विनिमय और जनसंपर्क से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गठिया आदि की मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की उपासना करें।

## अंर्तदशा :- गुरु - केतु
## ( 15/08/2025 - 22/07/2026 )

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 09/09/2018 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 15/08/2025 को प्रारंभ होकर 22/07/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

इस अवधि में आप स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेंगे। आपकी बुद्धि प्रखर है, सफलता प्राप्त करेंगे। आर्थिक प्रगति के लिए समय शुभ है। भाई-बहनों को छोटी-मोटी समस्या हो सकती है। आप समस्याओं का सामना साहसपूर्वक करेंगे। धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी। नेकी के कार्य करेंगे। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। भाग्य साथ देगा।

आपके जीवनसाथी प्रसिद्ध होंगे, यात्राएं होंगी, धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके पिता के विरोधी हो सकते हैं; पिता सफल रहेंगे। माता के दान आदि पर खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके भाई-बहनों के लिए मन की शांति, आत्मविश्वास, निवेश से लाभ, शिक्षा में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सफल होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे, उनका मुनाफा उत्तम रहेगा।

आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। बाहों में कभी-कभी दर्द हो सकता है। शुभत्व में वृद्धि के लिए श्वान को भोजन दें।

## अंर्तदशा :- गुरु - शुक्र
## ( 22/07/2026 - 22/03/2029 )

आपके लिए बृहस्पति महादशा 09/09/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 22/07/2026 को प्रारंभ होकर 22/03/2029 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपके पास सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। घरेलू सुख रहेगा। मित्रों और रिश्तेदारों से संबंध उत्तम होंगे। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। आयु में बड़े लोग प्रशंसा करेंगे। आपकी कला में रुचि प्रकाश में आएगी। सरकार से सम्मान मिलेगा। जीवनसाथी से खुशियां मिलेंगी। कार्यक्षमता और उत्साह उत्तम होंगे; समाज में सफलता और लोकप्रियता मिलेगी। मार्केटिंग में दक्षता उत्तम होगी।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं हो सकती हैं। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा ; स्पर्धियों पर विजय होगी। आपके भाइ-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, सफलता और आकांक्षाओं की पूर्ति का संकेत है। आपके पिता भाग्यशाली और सुख-साधनों से संपन्न रहेंगे।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी; भाग्यशाली रहेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो उच्चपद प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल होंगे, प्रोन्नति हो सकती है। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं; स्पर्धियों पर विजय होगी। व्यापारीगण लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बलगम संबंधी मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

## अंर्तदशा :- गुरु - सूर्य
## ( 22/03/2029 - 08/01/2030 )

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 09/09/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 22/03/2029 को प्रारंभ होकर 08/01/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपके पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। अपने से बड़े लोग और सहकर्मी प्रशंसा करेंगे। उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। भाग्य में वृद्धि होगी। दर्शनशास्त्र और भौतिक विज्ञान का अध्ययन कर सकते हैं। साहित्य और संचार माध्यम में सफल हो सकते हैं। बहुत सारे काम पूर्ण होंगे। कार्यक्षमता उत्तम होगी।

आपके जीवनसाथी की कार्यक्षमता उत्तम होगी, सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके पिता सफल होंगे और प्रगति करेंगे। माता की विरोधियों पर विजय होगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी के व्यापार से लाभ, धनागम, सफलता, सरकार से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, उच्चपद मिल सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो मामूली परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं की यात्रा हो सकती है। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए तांबा, गेहूं और लाल वस्त्र दान में दें।